



लोडफोड

51
YEARS
ANNIVERSARY

हँसी और मस्ती की पाठशाला

मोटू पतलू और
मूछें हो तो मोटू जैसी



VISIT...

LANZAROTE
Caliente.COM

लोटपोट

हँसी और मस्ती की पाठशाला

Visit:

www.lotpot.com

DIGITAL EDITION

ISSUE NO.33

Founder

Lt. Sh. A.P. Bajaj

Chief Editor
P. K. Bajaj

Editor
Aman Bajaj

Joint-Editors
Anushka
Amisha

Editorial Department

Concept illustration direction
Harvinder Mankkar

Editorial Address:
LOTPOT FORTNIGHTLY
A-5, Mayapuri, Phase-I,
New Delhi-110064.
Ph.: 28116120, 28117636
Fax.: 91-11-41833139
Email: edit@mayapurigroup.com
Web.: www.mayapurigroup.com

Printed at ARORBANS PRESS,
Shree S. L. Prakashan
A-5, Mayapuri, Phase-I, N.D. 110064.

Owner, Publisher, Printer
Parmod Kumar Bajaj

Printing Place:
A-5, Mayapuri, Phase-I, New Delhi-110064.

For Advertising: Shekhar Chopra
E-mail: shekhar@mayapurigroup.com

संपादकीय

विद्यासागर परीक्षा में क्यों पिछड़ जाता है ?

विद्यासागर एक मेधावी छात्र है। कक्षा में वह पढ़ाई के समय सभी प्रश्नों के उत्तर दे देता है। गृह कार्य में भी सदैव उसे अच्छे अंक मिलते हैं वह अपनी पाठ्य पुस्तकों पर काफी समय लगाता है। इतना होते हुए भी परीक्षा में वह अग्रिम पांच छात्रों की श्रेणी में नहीं आ पाता।

विद्यालय के मनोवैज्ञानिक सलाहकार के सामने विद्यासागर की समस्या रखी गई। उसने विद्यासागर से अनेक प्रश्न किये और उसकी तैयारी करने की विधि की जानकारी प्राप्त की। इस सब के बाद उस ने विद्यासागर की समस्या का विश्लेषण इन शब्दों में किया।

अपना गृह कार्य करते समय विद्यासागर अपनी पुस्तक और इंटरनेट खुला रखता है। गृह कार्य करते समय कोई निश्चित समय सीमा नहीं होती। वह अपना गृह कार्य पूरी मेहनत से करता है और उसे अच्छे अंक भी मिलते हैं। कक्षा में उसे केवल बोल कर उत्तर देने होते हैं और इस कारण वह उस का प्रदर्शन बहुत अच्छा होता है।

परीक्षा भवन में परिस्थितियां अलग होती हैं। प्रश्नों के उत्तर अलग तरीके से होते हैं। उस समय कोई पुस्तक उपलब्ध नहीं होती। प्रश्नों के उत्तर एक सीमित समय में देना होते हैं।

उत्तर लिख कर देने होते हैं। बोल कर नहीं। परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि घर पर भी तैयारी उसी प्रकार की परिस्थितियों में करे जैसी परीक्षा भवन में होती है। उसे अभ्यास करना चाहिए कि वह प्रश्नों के उत्तर लिख कर बिना पुस्तकों की सहायता के दे सके। साथ ही यह भी आवश्यक है कि उसे तीन घंटे लगातार बैठ कर लिखने की आदत पड़ जाये और वह दी हुई संख्या में प्रश्नों के उत्तर निर्धारित समय सीमा के अन्दर दे सके। इस के लिए आवश्यक है कि वह घर पर भी प्रश्नों के उत्तर लिखने का अभ्यास सामने घड़ी रख कर करें।

LOTPOT title is registered with the R.N.I., Govt. of India. All rights are reserved with publisher for every content published in Lotpot. Nothing should be reproduced in any form without the permission of publisher. All contents published in the Lotpot are work of fiction and any resemblance to people, place etc is purely incidental. Illustrations are based on the imagination of artist and editor and /or publisher are not responsible for it. Editor and publisher may not be in agreement with the opinion of writers over the published contents. If any body has any objection towards any published content, they are welcome to submit the same with the publisher and it will be published as well. All disputes will be subject to the jurisdiction of Delhi only. Rs 4/- surcharge extra for Nepal, Sri Lanka, Dubai and other Gulf countries.



नटखट नीटू

○ हरविन्द्र मांकड

नीटू, हम मछली पकड़ने कहां जा रहे हैं?

काली नदी पर...

मैंने तो सुना है वो खतरनाक जगह है..

हम डरपोक लोग नहीं हैं ना।

चलो अब आराम से बैठो, मुझे मछली पकड़ने दो।

उल्टा हम से सारे डरते हैं

ही ही ही



उफ.. लगता है
कोई बड़ी मछली
फंसी है..

तो सभी जोर
लगाते हैं

अरे बाप रे.. इतनी
बड़ी मछली!

हा हा हा.. मैं उड़ने
वाली मछली हूँ.. मुझे
नींद से जगाकर तुमने
अपनी शामत बुला ली
है..

लगता है यह कोई
खतरनाक जीव
है..

पर मुझे तो तेरे
जैसी रोबोट लग
रही है..

हां.. हो सकता
है..

हा हा हा.. समझदार
साथी है तुम्हारे.. मैं तुम
सब की मौत बनकर
आई हूँ..

यानि मशीनी हो..
डाक्टर डेविल की
नई शैतानी चाल हो..

मेरा मालिक है
वो.. अब मैं तुम्हें
निगल जाऊंगी..

ओह

जुगनू... इसके
ऊपर की फोटो
लो..

ओके बाँस

जुगनू ने पलभर में सब
दिखा दिया।

ओह.. तो
इलैक्ट्रॉनिक
मशीन है..

यानि रोबो
करेगा अब
इसका शिकार..

अभी लो..

मेरा शॉर्टसर्किट
हो रहा है..

फटाक...

खटाक...

शॉट...

रोबो ने अपनी छाती पर लगा बटन दबाया
और हजारों चुम्बक मछली से चिपक गये।

डाक्टर डेविल की बनी वो मशीन मछली
जलकर राख हो गई।



पता नहीं कब
जीतूंगा मैं.. यह
बच्चे तो मेरे भी
बाप है..

अहा.. अब
आई है असली
मछली..

यानि अब
दावत पक्की हा
हा हा...

मैंने तो उस
मशीनी मछली का
आयल पीकर ही
पेट भर लिया..



मोटू पतलू और मूछें हो तो मोटू जैसी

कथानक एवं चित्रांकन - हरविन्द्र मांकड़





बाल लम्बे करने की दवा बना रहा था। यही मौका है दवा को इस्तेमाल करने का..

रुक !!! ये झटके की दवा है.. खतरनाक भी हो सकती है।



हां यार.. उस खैराती डाक्टर का पता नहीं, कहीं उल्टी सीधी दवा बना दी तो लेने के देने भी पड़ सकते हैं।

तू इसे अभी टेस्ट के लिए मूछों पर लगा के देख.. फिर नतीजा देखकर सोचेंगे कि क्या करना है।



ये सही कहा तूने, मूछों पर असर कर गया तो समझो बालों पर भी करेगा..

तो फिर फटाफट कर.. झटका आ गया तो मूछें और बाल सब उखाड़ देगा..

मोटू ने उस दवा को अपनी मूँछों पर अच्छी तरह लगा लिया

मूँछों में सनसनाहट
हो रही है..

यानि दवा
काम कर रही
है।

अरे!! यह तो लम्बी
हो रही है।

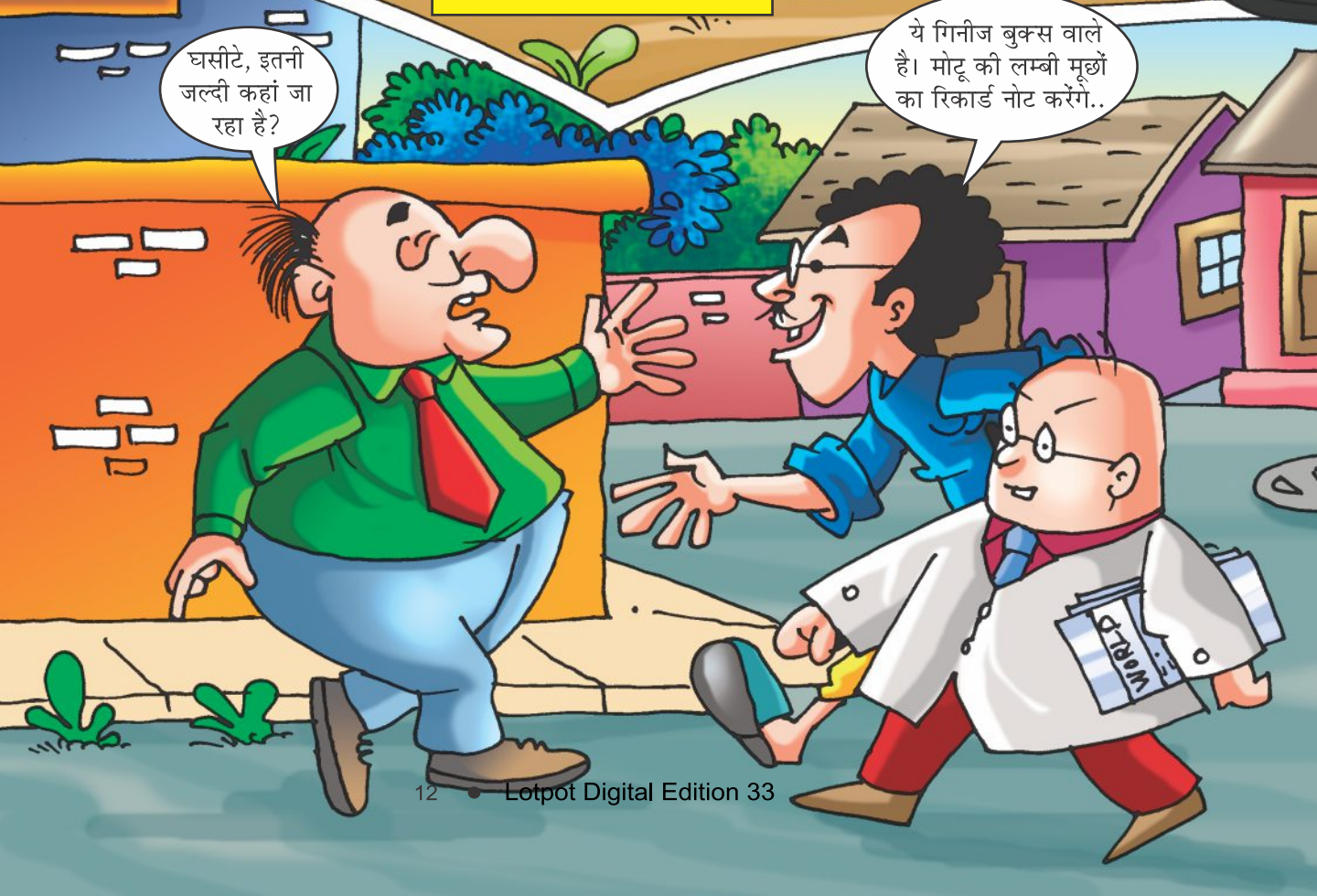
बाप रे..
इतनी ज्यादा
लम्बीSS

ओये.. लगता है
दवा ज्यादा चुपड़
ली है तूने..





घसीटे ने पलभर में वापसी की..



घसीटे, इतनी जल्दी कहां जा रहा है?

ये गिनीज बुक्स वाले हैं। मोटू की लम्बी मूछों का रिकार्ड नोट करेंगे..



मोटू की मूँछें तो
नार्मल है.. वो कब से
बड़ी हो गई?

तेरे वाली दवा लगाकर
वो दुनिया की सबसे
लम्बी मूँछें बन गई है..

अरे.. पर वो
दवा तो...

तू चुप कर यह दस
हजार की सक्योरिटी
रखकर आया हूं.. टाइम
कीमती है

यदि खबर सच
निकली तो एक लाख
डॉलर मिलेंगे.. वरना
दस हजार गये
तुम्हारे..

फिर तो जल्दी
जल्दी चलो...

लगता है वो आ गये..
डॉलर कमाने को तैयार
हो जा मोटू..

ई५५.. मूछों में फिर
कंपन हो रहा है..

कहां है दुनिया की
सबसे लम्बी मूछों
वाला आदमी?

म..मै.. हूं पर मूछें
सिकुड़कर वापिस
छोटी हो गई..

मेरे से मजाक किया..
बेवकूफ बनाया.. आज के
बाद कभी मत बुलाना..
और अपने दस हजार तो
भूल ही जाओ..

यह क्या हुआ..

मेरे दस हजार
गये पानी में..

ये क्या हुआ? मूछें
वापिस छोटी कैसे
हो गई?

क्योंकि वो दवा सिर्फ एक
घंटा ही असर करती है.. जब
वो पूरी तरह बनेगी तो ही
इस्तेमाल करनी थी। पर तुम
लोगों में इतना सब्र कहाँ..

हाय मेरे दस
हजार रुपयेSS
बूहू..

बेड़ागर्क हो तेरा झटके..
कम से कम एक दिन
असर वाली दवा बनाता
तो आज लाखों डालर
होते.. बूहूहू..

बाल कहानी

हिरण और कछुआ-अलग अलग..

जंगल में दो प्रकार के जानवर थे। शेर-चीता आदि मासाहारी थे, हिरण, नीलगाय, खरगोश, कछुआ आदि शाकाहारी वन्य प्राणी थे।

दोनों वर्गों के प्राणी एक दूसरे से अलग अलग रहते थे। शाकाहारी जानवरों में परस्पर अच्छी मित्रता थी। एक बार हिरण तालाब पर पानी पीने आया। यहां एक कछुआ भी रहता था।

हिरण ने कछुए को सोता देख कर कहा, 'मैंने कहानी सुनी है कि तुम ने खरगोश को दौड़ में हरा दिया था। क्यों न एक बार हमारी-तुम्हारी दौड़ हो जाये।'

कछुए का कोई इरादा हिरण का प्रतियोगी बनने का नहीं था पर उस हिरण की शेखी बर्दाशत नहीं हुई। उसने अपनी कमजोरी जानते हुए भी चुनौती स्वीकार कर ली।

सभी शाकाहारी जानवर

कछुए और हिरण की दौड़ का मजा लेने के लिए अगले दिन तालाब के किनारे एकत्र हो गये।

बन्दर को रेफरी बनाया गया। बन्दर ने चिल्ला कर खों.. खों.. की आवाज लगाई और दौड़ शुरू हो गई।

उसी समय जंगल में शिकारियों का एक समूह आया हुआ था हिरण अभी भाग कर थोड़ी दूर ही पहुंचा था कि शिकारी ने उसे देख लिया। उसने हिरण का पीछा किया और निशाना लगा कर बन्दूक चला दी। गोली हिरण के पैर में लगी वह भाग कर एक घनी झाड़ी में छिप गया। शिकारी निराश होकर जंगल से लौट गया।



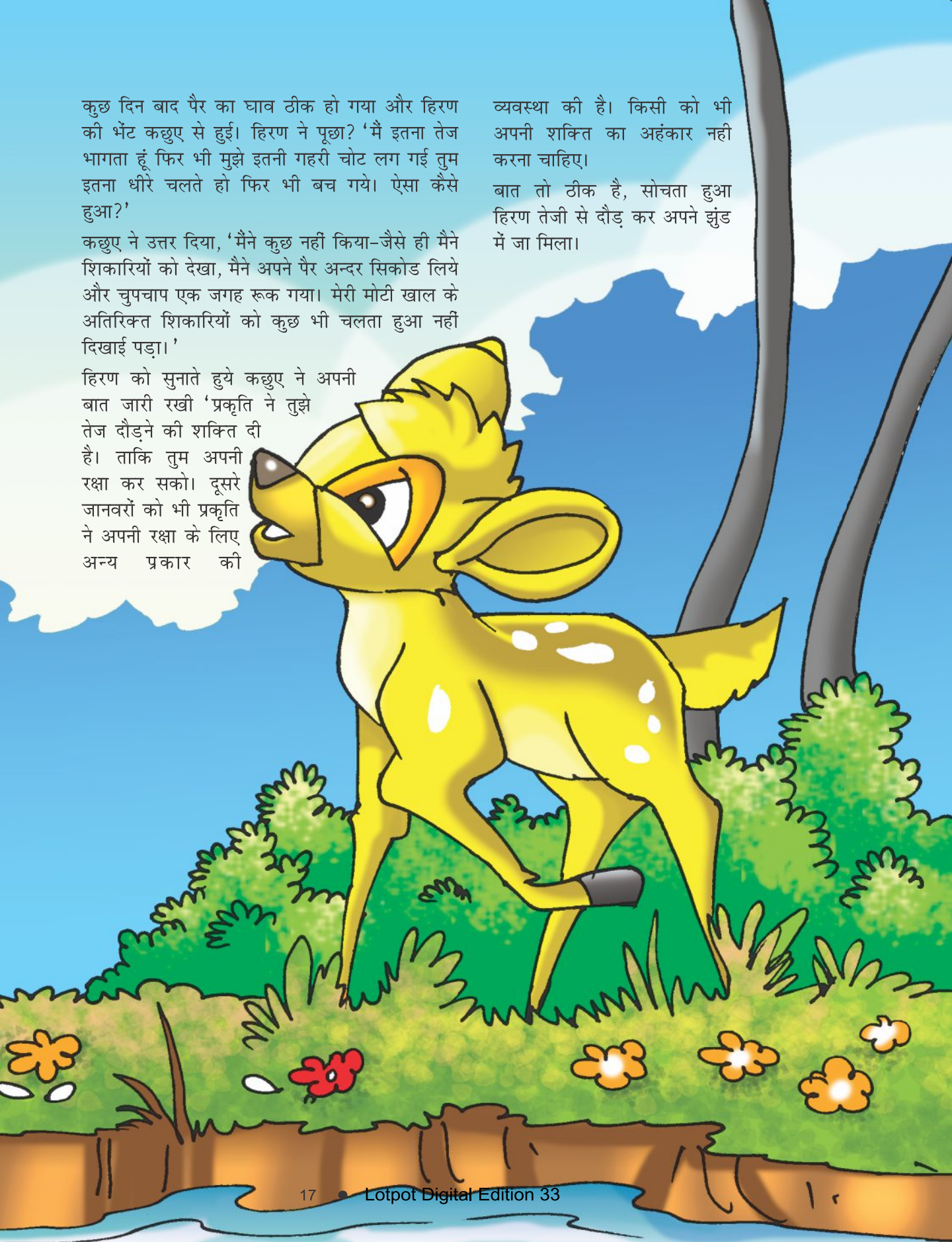
कुछ दिन बाद पैर का घाव ठीक हो गया और हिरण की भेंट कछुए से हुई। हिरण ने पूछा? 'मैं इतना तेज भागता हूँ फिर भी मुझे इतनी गहरी चोट लग गई तुम इतना धीरे चलते हो फिर भी बच गये। ऐसा कैसे हुआ?'

कछुए ने उत्तर दिया, 'मैंने कुछ नहीं किया-जैसे ही मैंने शिकारियों को देखा, मैंने अपने पैर अन्दर सिकोड़ लिये और चुपचाप एक जगह रुक गया। मेरी मोटी खाल के अतिरिक्त शिकारियों को कुछ भी चलता हुआ नहीं दिखाई पड़ा।'

हिरण को सुनाते हुये कछुए ने अपनी बात जारी रखी 'प्रकृति ने तुझे तेज दौड़ने की शक्ति दी है। ताकि तुम अपनी रक्षा कर सको। दूसरे जानवरों को भी प्रकृति ने अपनी रक्षा के लिए अन्य प्रकार की

व्यवस्था की है। किसी को भी अपनी शक्ति का अहंकार नहीं करना चाहिए।

बात तो ठीक है, सोचता हुआ हिरण तेजी से दौड़ कर अपने झुंड में जा मिला।



स्वास्थ्य जानकारी

ज्वर (बुखार)

- 1 यदि शरीर का तापक्रम 98.4 डिग्री से ऊपर हो तो उस स्थिति को ज्वर कहते हैं।
- 2 यदि ज्वर के साथ जाड़ा लगता है तो यह मलेरिया का लक्षण है।
- 3 मानसून के मौसम में ज्वर डेंगू के कारण भी हो सकता है।
- 4 ज्वर कम करने के लिए शरीर पर ठंडे पानी की पट्टियां एक सहज उपचार है।
- 5 ज्वर में बच्चों को एस्प्रीन नहीं देनी चाहिए।
- 6 थोड़ा ज्वर और जाड़े का न लगना बुरे लक्षण है।
- 7 तेज बुखार और पसीना न आना भी बुरे लक्षण है।
- 8 ऐसी अवस्था में शरीर में पानी की कमी नहीं होने देना चाहिए।
- 9 यदि ज्वर तीन सप्ताह तक नहीं सामान्य होता तो विशेषज्ञ डाक्टर की सलाह लें।
- 10 निरंतर हल्का ज्वर टी.बी. (तपेदिक) का लक्षण हो सकता है।
- 11 ज्वर और सर्दी का साथ साथ होना निमोनिया का लक्षण हो सकता है।
- 12 यदि लू लगने के कारण शरीर का तापक्रम 102 डिग्री से अधिक हो जाए तो ऐसी हालत में सामान्य पानी की पट्टियां प्रयोग में लें।



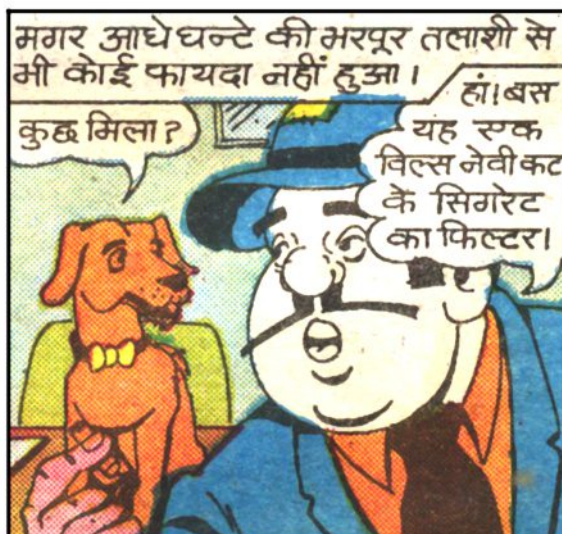
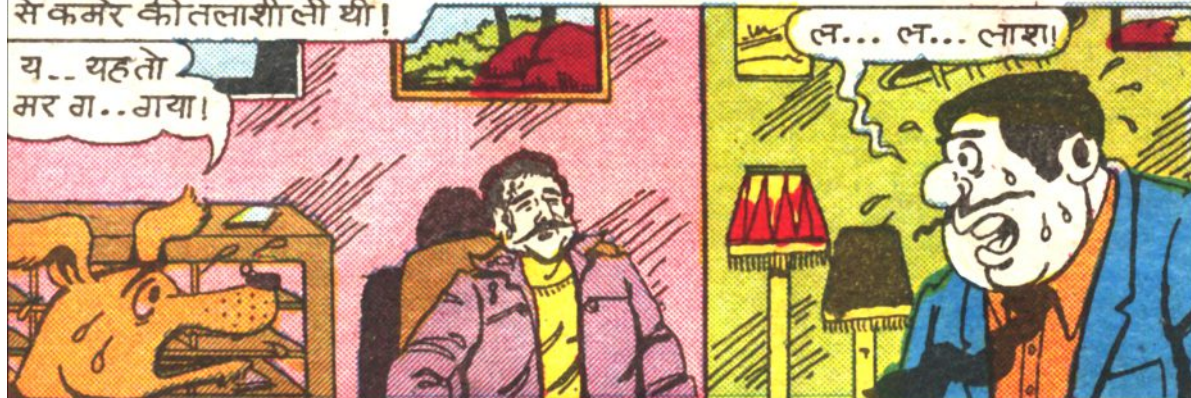
काटे खां - पाटे खां और अक्ल के अंधे

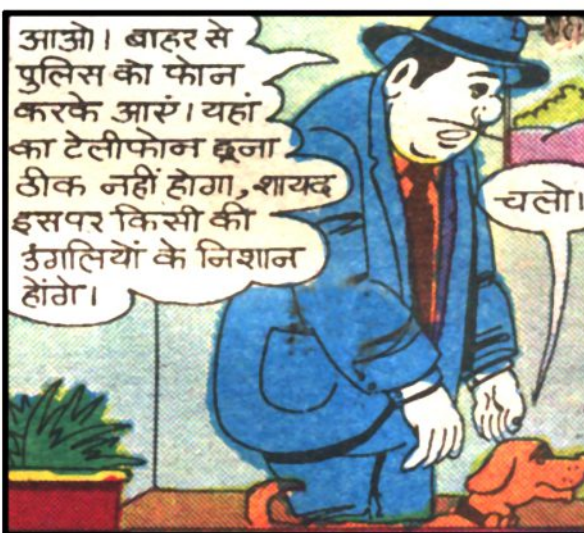
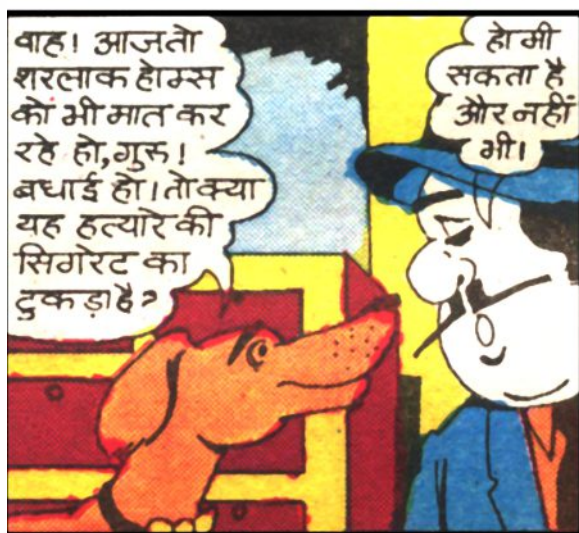
भाग-3

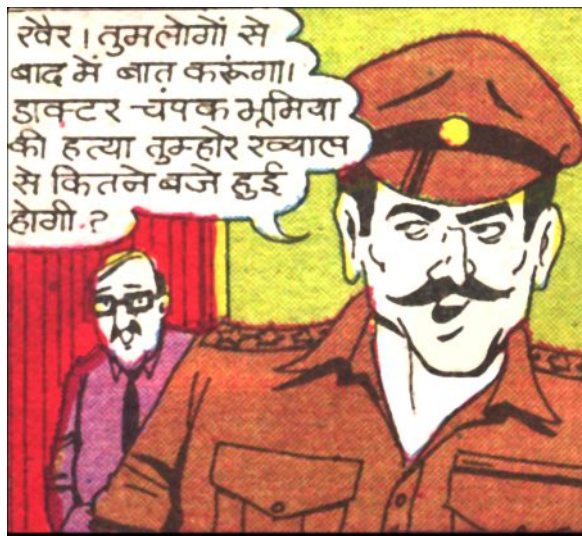




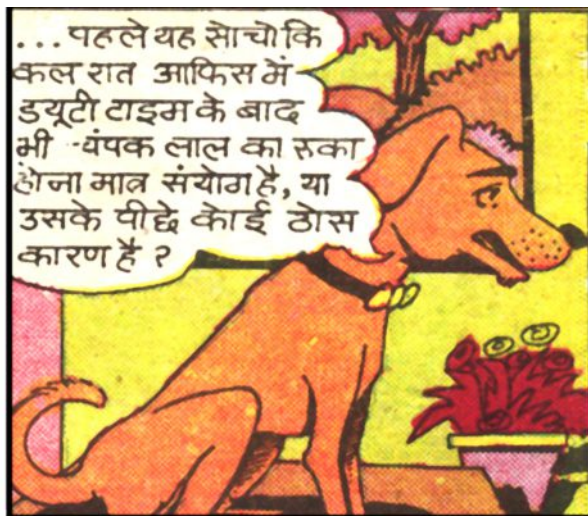
मगर आफिसमें कदम रखते ही दोनों के छक्के छूट गए। सामने चंपक भूमिया की लाश पड़ी हुई थी। उसके माथे के बीचो बीच गोली का स्रारव था। आस-पास खून बह-बह कर जम चुका था। कमरे के सामान से लगता था, किसी ने बड़ी बेदर्दी से कमरे की तलाशी ली थी।

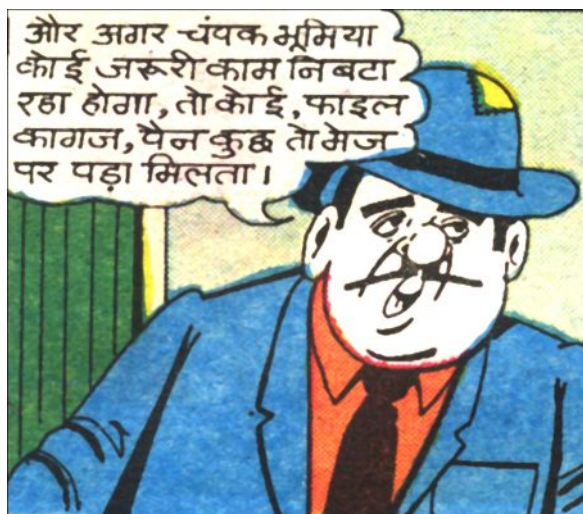












शेष भाग अगले अंक में पढ़ें

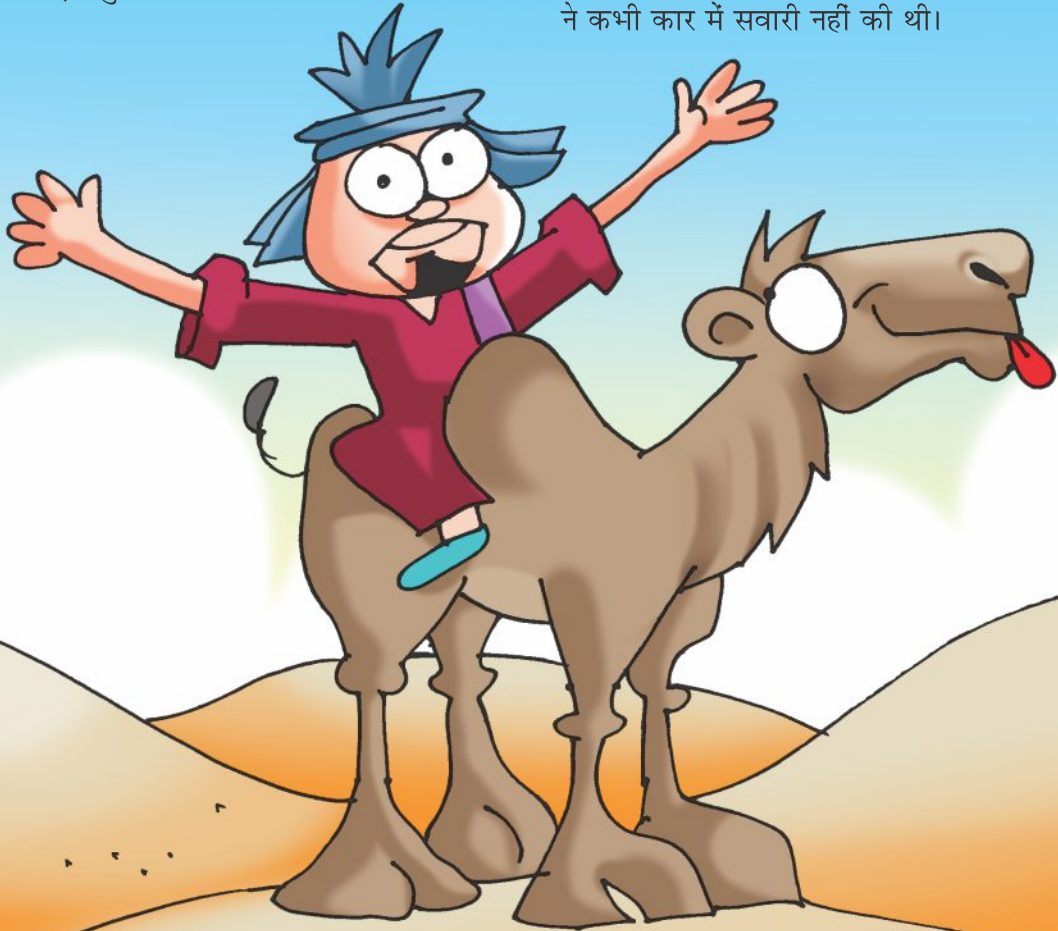
वह मरुस्थल का जहाज नहीं हो सकती..

रहमत की ऊंटनी उस के लिए मरुस्थल का जहाज थी। वह एक छोटा व्यापारी था जो राजस्थान के एक गांव में रहता था उस का कारोबार अच्छा चल रहा था और उसने कुछ धन भी इकट्ठा कर लिया था।

एक दिन उसके दरवाजे पर एक कार आकर रूकी एक पुरानी कार बेचने वाला व्यापारी उसके घर आया था उसे पता था कि रहमत के पास काफी धन है और वह उसे एक पुरानी कार बेचना चाहता था।

उसने रहमत को समझाया, 'तुमने सारी जिन्दगी बहुत कड़ी मेहनत की है। अब समय आ गया है कि तुम बूढ़ी ऊंटनी की सवारी छोड़ो। तुम्हारा सफर बहुत ही थकाने वाला होता है। मैं तुम्हें आराम से सफर करने का एक अवसर देना चाहता हूँ। मेरे साथ चलो और चलकर खुद देख लो।'

रहमत ने सोचा मुफ्त में कार की सैर करने में क्या हर्ज है। वह कार के सौदागर के साथ ही चला और दोनों गांव के बाहर निकल पड़े रहमत की गाड़ी पर जाता हुआ देखकर ऊंटनी बड़ी निराश और दुखी हुई। रहमत ने कभी कार में सवारी नहीं की थी।



एक बार वह बस में बैठा था पर भीड़ में उसका दम घुटता रहा। यहां गद्दे दार सीट पर रहमत को लगा कि सचमुच उसे अपनी यात्रा का साधन बदल देना चाहिए।

‘मुझे कार की बात सोचनी ही चाहिए। इस उम्र में मुझे थोड़े आराम का हक है।- कुछ दिन के लिए एक ड्राइवर रख लूंगा- फिर कार खुद चलाऊंगा। गांव के सारे लोगों पर रहमत की कार का कितना रोब पड़ेगा। सामान ले जाना भी सुविधा जनक हो जाएगा। मैं फिर दूर के गांवों से भी व्यापार कर पाऊंगा’ रहमत आने वाले दिनों के सुखद सपनों में खोया हुआ था कि कार एक दम रूक गई- बाहर निकल कर देखा कि कार के पहिये गहरी रेत में घंस गये हैं।

‘मुझे शहर जा कर क्रेन लानी पड़ेगी-तभी गाड़ी बाहर निकल पायेगी। कार के व्यापारी ने कहा- ‘इस की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। मैं अभी जाकर अपनी ऊंटनी ले आऊंगा-वह खींच कर कार बाहर निकाल देगी। रहमत ने कहा।

रहमत ने उत्तर की प्रतीक्षा नहीं की वह घर गया और कुछ समय बाद अपनी ऊंटनी पर चढ़ कर वहीं वापस आ गया। कार में रस्सी बांधी गयी और थोड़े प्रयासों के बाद ऊंटनी ने रस्सी खींचकर गाड़ी रेत से बाहर निकाल दी।

‘आप ने कार में घुमाया-आप का धन्यवाद मैं अपनी ऊंटनी पर ही सवारी करना पसन्द करूंगा’ रहमत ने अपना निर्णय कार के व्यापारी को सुना दिया।

व्यापारी निराश हुआ पर कुछ कहने की स्थिति में नहीं था।

सब से ज्यादा खुशी रहमत की ऊंटनी को हो रही थी।-उसे लगा कार के रूप आई सौतन अब कभी उस के जीवन में नहीं आ पायेगी।





क्या आपको पता है.?

1. चीनी (सुगर) को जब चोट पर लगाया जाता है तो दर्द तुरंत कम हो जाता है।
2. जरूरत से ज्यादा टेंशन आपके दिमाग को कुछ समय के लिए बंद कर सकती है।
3. 92 लोग सिर्फ हंस देते हैं जब उन्हें सामने वाले की बात समझ नहीं आती।
4. बत्तख अपने आधे दिमाग को सुला सकती हैं, जबकि उनका आधा दिमाग जगा रहता।
5. कोई भी अपने आप को सांस रोककर नहीं मार सकता।
6. स्टडी के अनुसार होशियार लोग ज्यादा तर अपने आपसे बातें करते हैं।
7. सुबह एक कप चाय की बजाए एक गिलास ठंडा पानी आपकी नींद जल्दी खोल देता है।
8. जुराब पहन कर सोने वाले लोग रात को बहुत कम बार जागते हैं या बिल्कुल नहीं जागते।
9. फेसबुक बनाने वाले मार्क जुकरबर्ग के पास कोई कालेज डिग्री नहीं है।
10. आपका दिमाग एक भी चेहरा अपने आप नहीं बना सकता आप जो भी चेहरे सपनों में देखते हैं वो जिदंगी में कभी ना कभी आपके द्वारा देखे जा चुके होते हैं।





क्या आप जानते हैं वो लड़का कौन था?

सुलेना मजुमदार अरोरा

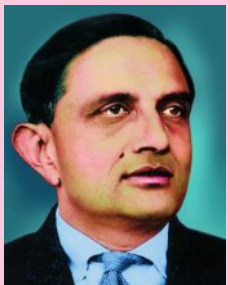
एक दिन, एक सज्जन धोती और शॉल ओढ़े हुए चेन्नई के समुद्र तट पर बैठकर भगवत गीता का पाठ कर रहे थे।

वहाँ एक अठारह साल का लड़का भी समुद्र तट पर बैठा हुआ प्रकृति का आनंद ले रहा था साथ ही वो गौर से उस व्यक्ति को भगवत गीता का पाठ करते हुए भी सुन रहा था। अचानक उसने बड़ी जिज्ञासा के साथ उस व्यक्ति से पूछा, "ये आप क्या पढ़ रहे हैं?" जब उस व्यक्ति ने बताया कि वह भगवत गीता का पाठ कर रहे हैं तो आश्चर्य से उस लड़के ने कहा, "ओह, क्या आप आज के आधुनिक अंतरिक्ष युग में भी ऐसी किताब पढ़ते हैं? जरा सोचिए इस समय हम चौंद पर पहुँच गए हैं और आप अभी भी गीता और रामायण पर अटके हुए हैं?"

यह सुनकर उस सज्जन व्यक्ति ने मुस्कराते हुए लड़के से पूछा, "गीता के बारे में तुम क्या जानते हो?"

लड़के ने उनके सवाल का जवाब तो नहीं दिया उल्टे उत्साह से कहने लगा, "यह सब पढ़कर क्या होगा? मैं तो विक्रम साराभाई अनुसंधान संस्थान का छात्र हूँ, आधुनिक विज्ञान की पढ़ाई कर रहा हूँ और मैं एक वैज्ञानिक हूँ। सच मानिए, गीता पाठ करके कुछ हासिल नहीं होगा। यह ज्ञान किस काम का है?"

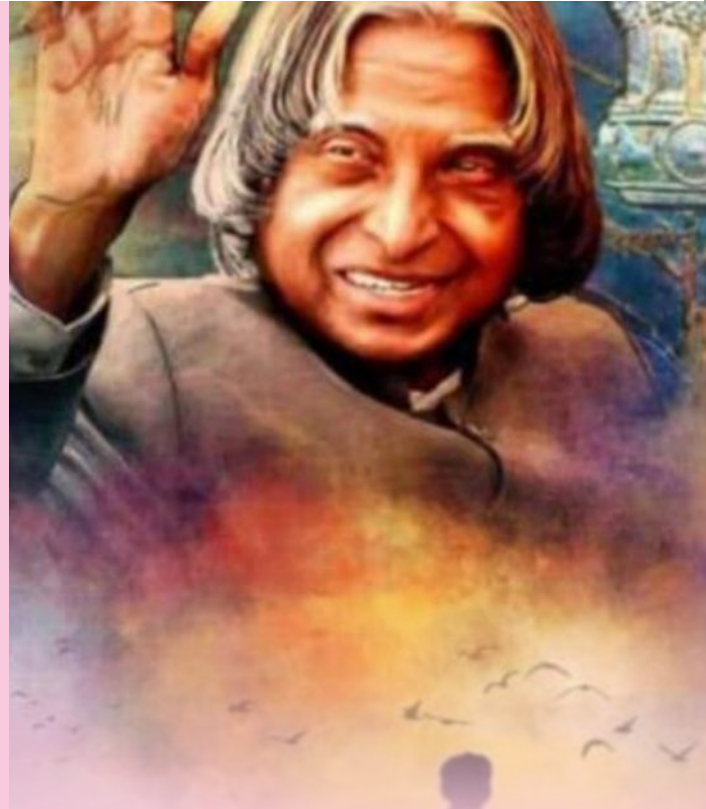
लड़के की ऐसी बातें सुनकर वह सज्जन हंस पड़े पर कुछ बोले नहीं। तभी सामने सड़क पर दो बड़ी बड़ी गाड़ियाँ वहाँ आकर रुकीं। प्रथम कार से दो ब्लैक कमांडोज और दूसरे कार से एक सिपाही नीचे उतरे। सिपाही ने उस सज्जन को अदब से सर झुकाकर अभिवादन करते हुए बड़ी कार का पिछला दरवाजा खोला, फिर सलामी दी और दरवाजे के पास खड़ा हो गया। तब वह सज्जन व्यक्ति, जो गीता का पाठ कर रहे थे, उठ खड़े हुए और धीमी गति से कार में चढ़कर बैठ गए।



यह सब देख कर लड़का चकित रह गया। उसे लगा कि जरूर वह कोई प्रसिद्ध व्यक्ति होगा। मन की उत्सुकता का समाधान करने के लिए वह तेज़ी से दौड़कर गाड़ी के पास गया और भीतर झाँककर उस व्यक्ति से पूछा, "सर...सर.. क्या मैं जान सकता हूँ कि आप कौन हैं?". यह प्रश्न सुनकर वो व्यक्ति मुस्कराते हुए बहुत धीमी आवाज में बोले, "मैं विक्रम साराभाई हूँ।"

सुनकर वो लड़का हैरान सा रह गया, जैसे उसे 440 वोल्ट का झटका लगा हो।

जिनसे वो ज्ञान विज्ञान पर बहस करने चला था, वो सज्जन खुद विक्रम साराभाई थे, उस अनुसंधान संस्थान का मालिक, जहाँ



का वो छात्र था? लड़का अपने विज्ञान संस्थान के मालिक का विचार जानकर बेहद प्रभावित हुए।

क्या आप जानते हैं यह लड़का कौन था?

वह लड़का, रक्षा अनुसंधान एवं भारतीय अंतरिक्ष वैज्ञानिक तथा हमारे देश के पूर्व राष्ट्रपति डॉ अबुल पाकिर जैनुलअब्दीन अब्दुल कलाम

(ए पी जे अब्दुल कलाम) थे। इन्होंने मुख्य रूप से एक वैज्ञानिक और विज्ञान के व्यवस्थापक के रूप में चार दशकों तक रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) संभाला व भारत के नागरिक अंतरिक्ष कार्यक्रम और सैन्य मिसाइल के विकास में भी शामिल रहे। इन्हें बैलेस्टिक मिसाइल और प्रक्षेपण यान प्रौद्योगिकी के विकास के कार्यों के लिए भारत में 'मिसाइल मैन' के रूप में जाना जाता है।

उस दिन के बाद, डॉ. कलाम ने भगवत गीता को पढ़ा। रामायण, महाभारत और अन्य वैदिक पुस्तकें भी पढ़ी और गीता पढ़ने के परिणामस्वरूप, डॉ कलाम जीवन भर शाकाहारी रहे। आगे चलकर उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है, "गीता एक विज्ञान है। गीता, रामायण, महाभारत भारतीयों की अपनी सांस्कृतिक विरासत का एक बड़ा गर्व का विषय है।"



टोक्यो ओलंपिक 2020 में भारत के हिस्से में अब तक आ चुके हैं 7 पदक



भारत के नीरज चोपड़ा ने शनिवार को टोक्यो ओलंपिक 2020 में स्वर्ण पदक जीता, जिससे भारत को अपना सातवां पदक जीतने में मदद मिली। यह किसी भी ओलंपिक में भारत का अब तक के सर्वाधिक पदक है। इससे पहले, भारत ने 2012 के लंदन ओलंपिक में दो रजत सहित छह पदक जीते थे।



1. नीरज चोपड़ा

भाला फेंक में भारत के नीरज चोपड़ा ने 87.58 मीटर लंबी भाला फेंक में स्वर्ण पदक जीता।



2. मीराबाई चानू

भारोत्तोलन में मीराबाई चानू ने महिलाओं के 49 किलोग्राम भार वर्ग में रजत पदक हासिल किया।



3. रवि कुमार दहिया

कुश्ती में भारत के रवि कुमार दहिया ने 57 किलोग्राम भार वर्ग में रजत पदक जीता ।



4. बजरंग पुनिया

65 किलोग्राम भार वर्ग में, बजरंग पुनिया ने कजाकिस्तान के लिए कांस्य पदक जीता ।



5. पी.वी. सिंधु (पीवी सिंधु)

टोक्यो ओलंपिक 2020 के रजत पदक विजेता बैडमिंटन खिलाड़ी पी.वी. सिंधु ने चीनी खिलाड़ी को हराकर कांस्य पदक जीता ।



6. लवलीना बोरगोहेन

महिला मुक्केबाजी में लवलीना बोरगोहेन ने भारत के लिए कांस्य पदक जीता ।



7. पुरुष हॉकी टीम

भारत की पुरुष हॉकी टीम ने 41 साल बाद जर्मनी को हराकर पदक जीता । भारत ने कांस्य पदक जीता ।

एक दिन शेखचिल्ली नूरीजिन्
को और नत्थू धोबी के लड़के
निखट्टू को पढ़ना लिखना
सिखा रहा था।

©COPYRIGHT

शेख चिल्ली



अरे, शेखचिल्ली भाई, कुएं में लुढ़क गया।

कुएं में लुढ़क गया?

कोई बात नहीं। मैं अभी बाहर निकाल देता हूँ।



सामग्री-चाकू या कैंची, फोम बोर्ड, रसोई में इस्तेमाल किए जाने वाला तौलिया (18 से 26 इंच), तकिया (12 से 16 इंच), ड्रॉइंग पेंस,पेंट ब्रुश, गोंद

पढ़ने का तकिया

विधि

1. चाकू या कैंची की मदद से फोम बोर्ड में से 10 बाय 14 इंच का (चतुर्भुज) काट लें।
2. अब तौलिये को एक चपटी जगह पर रख लें। इसके बीच में कटा हुआ फोम बोर्ड रख लें और इसके ऊपर तकिया रखें।
3. अब तौलिये को तकिया और बोर्ड के ऊपर इस तरह से लपेटे जैसे आप किसी चीज़ को गिफ्ट कर रहे हो। सारे कोनों पर ड्रॉइंग पिन लगा दें।
4. कुछ पेंस को हटाकर उसकी जगह पर गोंद से चिपकाएं। आप गोंद को पेंटिंग ब्रुश की मदद से चिपका सकते हैं। जब आप सारे कोनों पर गोंद लगा दें तो गोंद को सूखने दें। अब जब गोंद सूख जाए तो सारी पेंस को हटा दे। अब आपका तौलिया बनकर तैयार है।



मानो ना मानो

आदिमानव द्वारा बनाये गए गुफाओं के चित्रों में नीला और हरा रंग बिलकुल नहीं पाया गया है।

पालतु कुत्ते दरअसल भेड़िये की नस्ल से हैं।

शिकारी भेड़िये के नवजात बच्चों को उठाकर घर ले आये और वहां आदमियों के बीच उनकी परवरिश हुई। धीरे धीरे उन्होंने आदमियों को अपना मालिक स्वीकार कर लिया।

रंग भरो



बाल कहानी

मुर्गाबी, कौआ और बुद्धिमान उल्लू

जंगल के किनारे ऊंचे पेड़ पर कौआ अपना घोंसला बना रहा था। बनाते बनाते कौए को यह लगा कि अभी कुछ कमी है। उसने घोंसले के बीच में कुछ सूखी घास रखदी और खाली स्थानों को भी भर दिया। 'अब अंडे देने के लिए घोंसला तैयार है' तभी उसने देखा कि नीचे की एक डाल पर एक मुर्गाबी एक अन्य प्रकार का घोंसला बना रही है। उसने डाल पर कुछ छोटी टहनियां बिछाई थीं और उन पर गीली मिट्टी का लेप किया था मुर्गाबी ने बड़ी मेहनत से अपने घोंसले को सुन्दर बनाया था। बना हुआ घोंसला एक सुन्दर गील कटोरे की भांति लग रहा था चिड़िया को भरोसा था कि इसमें सुविधा पूर्वक अंडे दिये जा सकते हैं। उसे यह भी विश्वास था कि अंडों में जब बच्चे निकलेंगे तो उन्हें अपना सुन्दर घर देख कर बहुत खुशी होगी।

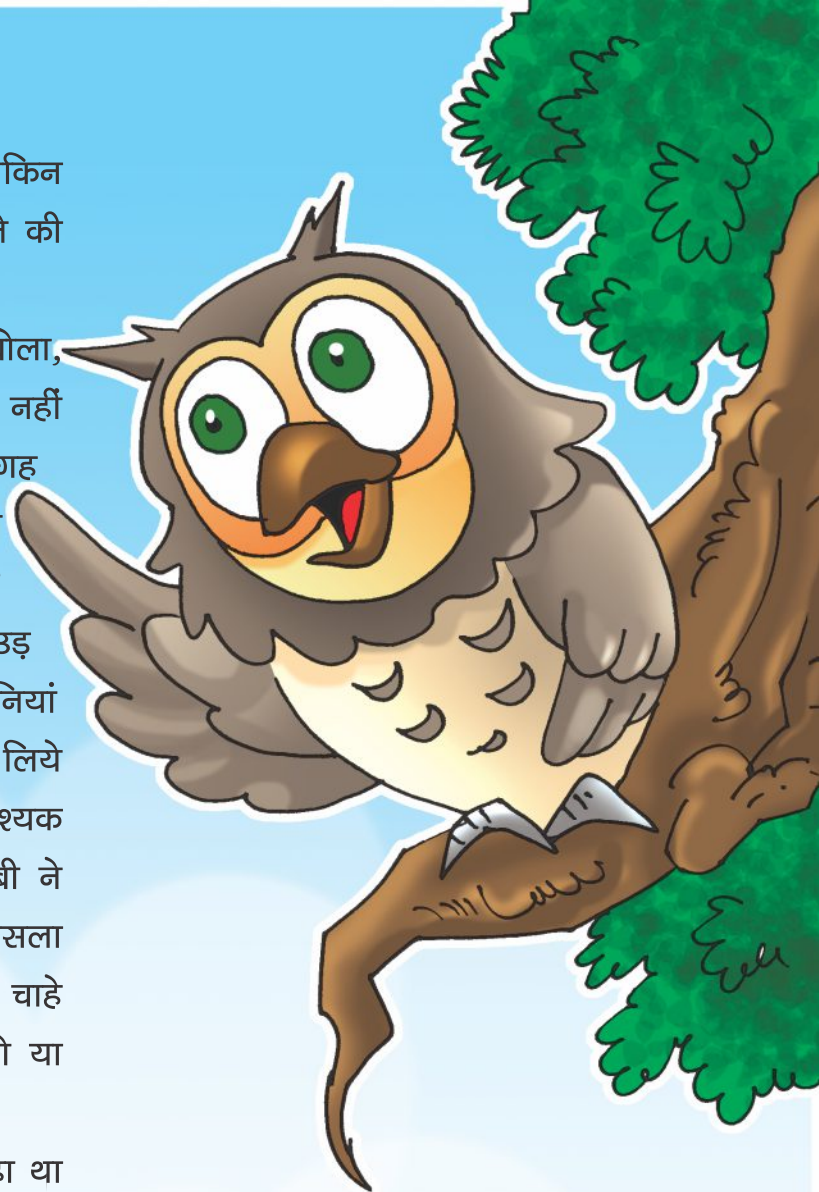
मुर्गाबी ने कौए से कहा,



‘घोंसला करीब करीब बन चुका है लेकिन अभी एक कोने में लिपाई और करने की आवश्यकता है’

कौए ने इसे अनावश्यक समझा। वह बोला, ‘मैं घोंसला बनाने पर इतना समय नहीं लगाता अंडे देने के लिए एक ऐसी जगह चाहिए जहां बिल्ली न पहुंच सके। और बच्चों ने कोई हमेशा इस घोंसले में रहना नहीं है। कुछ दिन बाद वे उड़ जायेंगे। मेरे हिसाब से कुछ सूखी टहानियां और बीच में सूखी घांस घोंसले के लिये काफी है। ज्यादा समय लगाना अनावश्यक है।’ ‘पर मेरी सोच अलग है’ मुर्गाबी ने कहा, ‘मेरी कोशिश यह है कि मेरा घोंसला सुन्दर भी हो और आरामदायक भी चाहे इसे बनाने में कितना भी समय लगे या परिश्रम करना पड़े।’

बुद्धिमान उल्लू दोनों की बातें सुन रहा था उससे नहीं रहा गया और कहने लगा, ‘इस



से कोई फर्क नहीं पड़ता कि नवजात बच्चे कितने समय तक घोंसले में रहेंगे। घोंसला सभी प्रकार से पूरा होना चाहिए। जो काम भी हम करें, हमें पूरे प्रयास से उसे सुन्दर बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। अपनी सुन्दर रचना देखकर आपको सदैव एक अद्भुत खुशी महसूस होगी’

यह कहकर उल्लू उड़ गया और कौआ और मुर्गाबी उस के कथन पर विचार में लग गये।

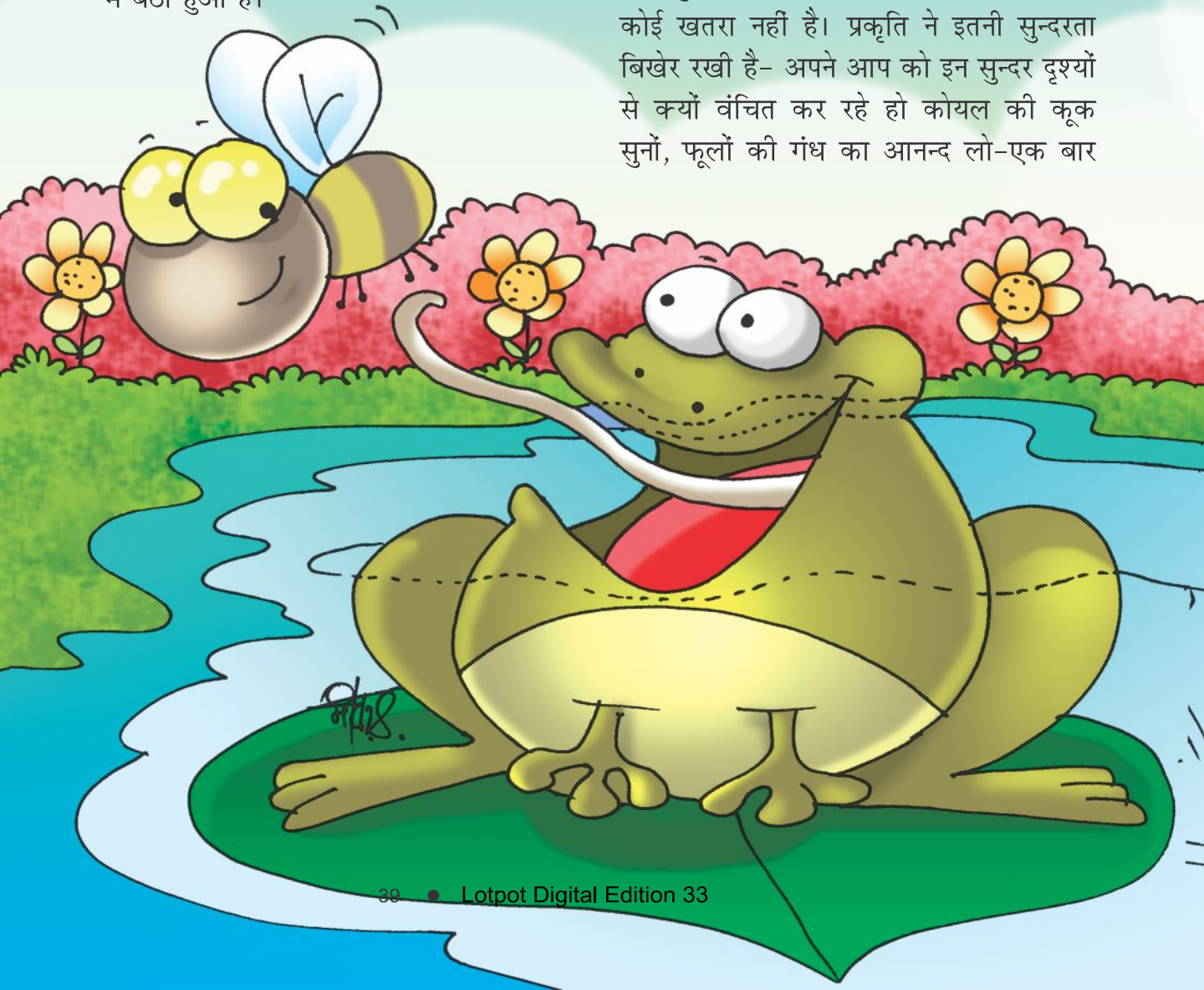


कुएं का मेंढ़क

बारिश थम चुकी थी। चारों ओर हरियाली छाई हुई थी। पानी से धुले पेड़ों पर एक नयी छटा दिख रही थी। मधुमक्खी एक खिले हुये फूल पर मंडरा रही थी। वह सारे उपवन में घूम-घूम कर अपने छत्ते पर ले जाने के लिये परागकण एकत्र कर रही थी। कुएं की ऊपर उड़ते हुई मक्खी ने देखा कि नीचे एक मेंढ़क गन्दे पानी में बैठा हुआ है।

‘नमस्कार मेंढ़क भाई-बड़ा मनोहर मौसम है बाहर आ कर मौसम का आनन्द लो’ मक्खी ने गुनगुनाते हुए कहा!

‘मैं जहां हूं वहीं बहुत खुश हूं। तुम्हे पता है कुछ दिन पहले मेरा एक साथी कुएं से बाहर निकला था और एक सांप उसे खा गया। मैं कोई खतरा मोल लेना नहीं चाहता कुएं के अन्दर से मेंढ़क ने कहा। मधुमक्खी निराश नहीं हुई। उसने फिर कहा, ‘बाहर आ जाओ कोई खतरा नहीं है। प्रकृति ने इतनी सुन्दरता बिखेर रखी है- अपने आप को इन सुन्दर दृश्यों से क्यों वंचित कर रहे हो कोयल की कूक सुनों, फूलों की गंध का आनन्द लो-एक बार



कुएं से बाहर आओं, मेंढक ने एक बार फिर कुएं के गन्दे पानी में डूबकी लगाई-वह मधु मक्खी के प्रकृति वर्णन से बिल्कुल भी प्रभावित होना नहीं चाहता था।

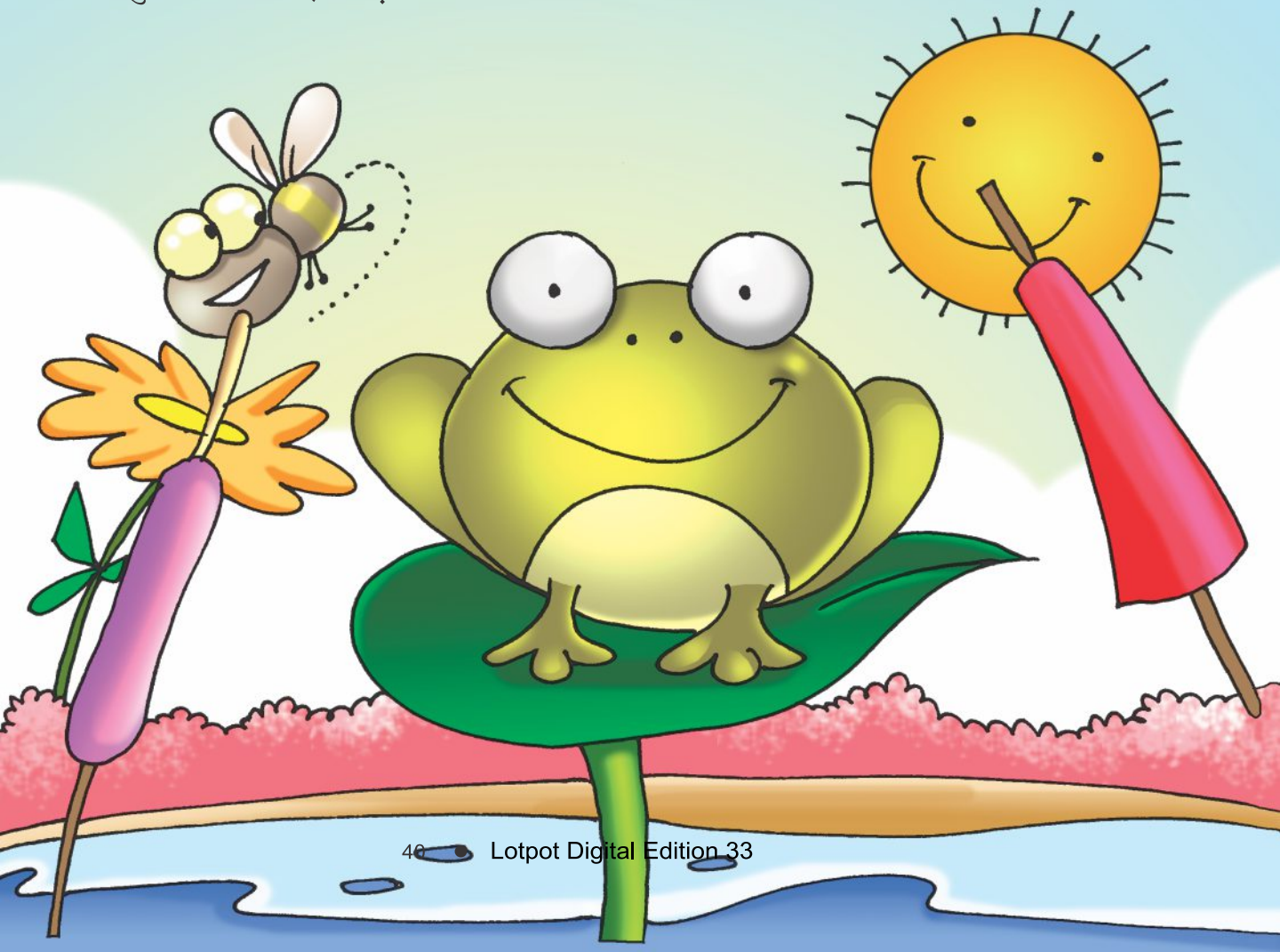
मधुमक्खी ने फिर कहा, 'अहा-आकाश में कितना सुन्दर इन्द्रधनुष छा गया है- आओ बाहर आ कर देखो'

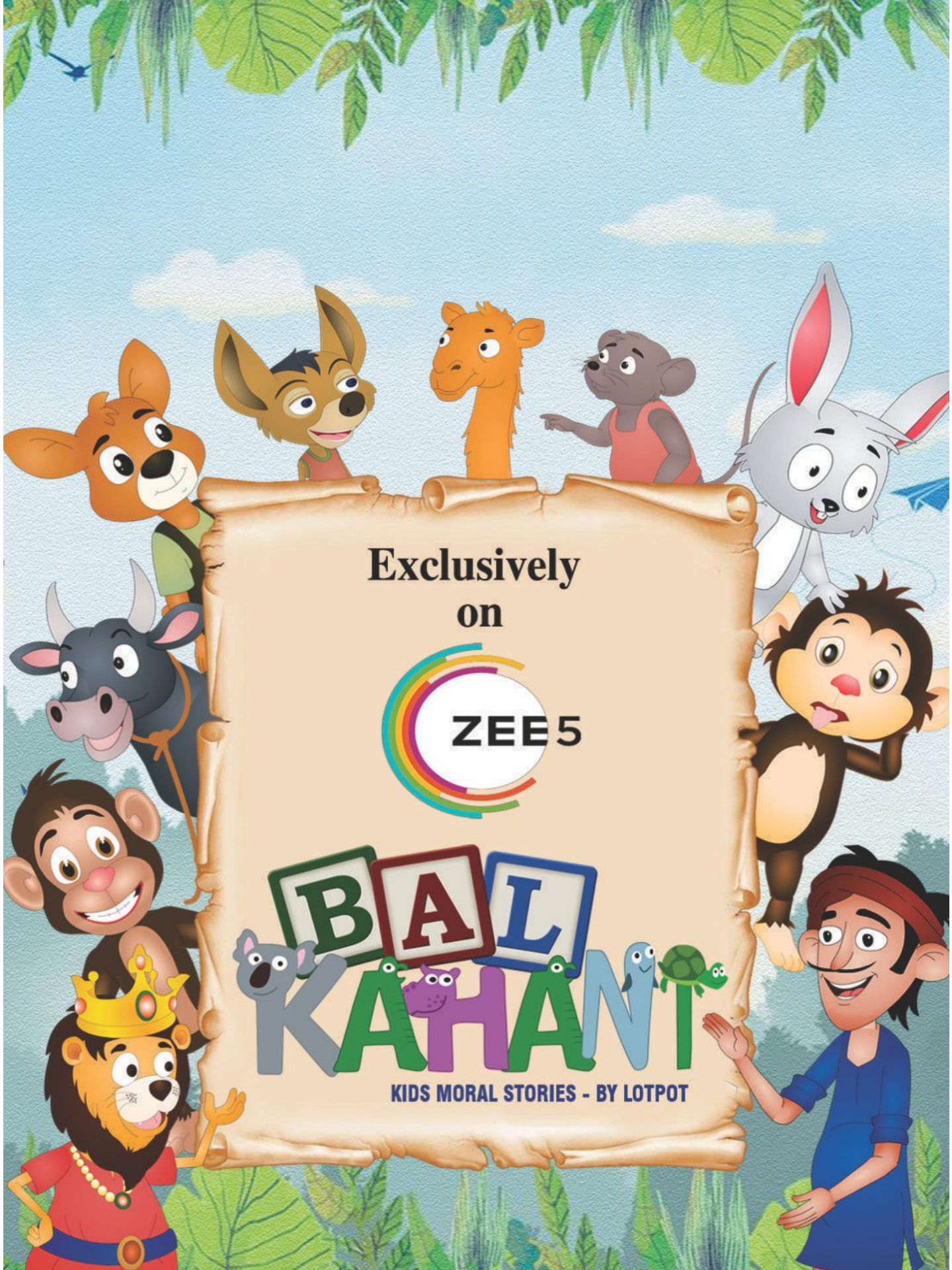
'देखने लायक कुछ भी नहीं है मुझे तो सिर्फ काले बादल दिखाई दे रहे हैं। कुएं के अन्दर से मेंढक ने कहा।

सभी कुछ खुला पड़ा था पर मेंढक ने अपने आपको सारी सुन्दरता से वंचित कर रखा था उसके दिमाग पर केवल एक बात छाई हुई थी। बहुत दिन पहले एक मेंढक को सांप खा गया

था। मक्खी के बार-बार आग्रह करने पर आखिर मेंढक बाहर आ गया और धूप में इन्द्रधनुष व वर्षा होती देखकर मेंढक हैरान हो गया और मक्खी को धन्यवाद किया कि अगर मैं बाहर नहीं आता तो इतना सुन्दर दृश्य देखने से वंचित हो जाता। तो प्रिय पाठकों तुम्हें अपने चारो ओर अनेक ऐसे ही मेंढक मिल जायेंगे। अपने पूर्व आग्रह छोड़ो कितना कुछ प्रकृति तुम्हें देने को उत्सुक है। तुम्हे केवल कुएं से बाहर आना है।

ध्यान रहे- यदि जीवन में सफलता चाहते हो तो थोड़े खतरे उठाने के लिए तैयार रहो।





Exclusively
on



BAL KAHANI

KIDS MORAL STORIES - BY LOTPOT